काव्य के तत्त्व एवं प्रकार

डॉ. दीप्ति धीर,
सहायक प्रोफेसर,
हिन्दी विभाग ।

काव्य के तत्त्व एवं प्रकार

काव्य – काव्य पद्यात्मक और छंदबद्ध होता है । इसमें चिंतन की अपेक्षा भावों की प्रधानता होती है । इसका उद्देश्य सौंदर्य की अनुभूति द्वारा आनन्द की प्राप्ति कराना होता है ।

काव्य के तत्त्व

काव्य के चार तत्त्व होते हैं -

१. भाव तत्त्व
२. बुद्धि तत्त्व
३. कल्पना तत्त्व
४. शैली तत्त्व

काव्य के प्रकार

काव्य के दो प्रमुख प्रकार माने जाते हैं –

1. दृश्य काव्य
2. श्रव्य काव्य।

1. दृश्य काव्य – जिस काव्य का आनन्द रंगमंच पर देखकर लिया जाए उसे दृश्य काव्य कहते है। इसके अन्तर्गत – नाटक, एकांकी ,गीतिनाट्य आदि रूप आते हैं ।

2. श्रव्य काव्य – जिस काव्य को सुना और पढ़ा जा सके उसे श्रव्य काव्य कहते है ।

श्रव्य काव्य के प्रमुख प्रकार :-

(क) प्रबंध काव्य
(ख) मुक्तक काव्य
(ग) चम्पू काव्य

(क) प्रबंध काव्य – प्रबन्ध काव्य में कथा होने से पूर्वापर-संबंध होता है । इसमें छंद एक-दूसरे से कथानक के क्रम से बँधे रहते हैं ।

प्रबंध काव्य के दो भेद हैं –

१. महाकाव्य
२. खण्डकाव्य

१. महाकाव्य – इसमें मानव-जीवन का व्यापक चित्रण प्रस्तुत किया जाता है। बन्ध की दृष्टि से इसमें पूर्वापर प्रसंग का परस्पर सम्बन्ध एवं तारतम्य रहना बहुत आवश्यक है ।

महाकाव्य के लक्षण :- प्राचीन आचार्यों ने महाकाव्य के विविध लक्षण दिए हैं, जो इस प्रकार हैं -

१. **सर्गबद्धता** – महाकाव्य सर्गबद्ध होता है । इसमें कम से कम आठ सर्ग होने चाहिए । सर्ग के अन्त में आगामी कथा की सूचना होनी चाहिए।

२. कथानक – महाकाव्य का कथानक ऐतिहासिक, पौराणिक या लोक प्रसिद्ध होना चाहिए । कथा में इतिहास और कल्पना का समन्वय भी हो सकता है ।

३. रस - महाकाव्य में एक प्रमुख रस होता है और अन्य रस गौण रूप में आते हैं। इसका प्रमुख रस वीर, शान्त और करुण रस आदि होता है ।

४. नायक- नायिका – महाकाव्य का नायक या नायिका धीरोदात्त गुणों से सम्पन्न होने चाहिए । यह कोई देवी-देवता या उच्चकुल में उत्पन्न व्यक्ति हो सकता है।

५. प्राकृतिक चित्रण – महाकाव्य में प्रकृति का चित्रण होता है। इसमें सूर्य, चन्द्रमा, रात्रि, दिन, संध्या, पर्वत, समुद्र, ऋतु, फूल-पौधों आदि का चित्रण किया जाता है ।

६. मंगलाचरण - महाकाव्य का आरम्भ मंगलाचरण आशीर्वचन या स्तुति से होना चाहिए । प्रारम्भ में वर्ण्य विषय का संकेत भी रहता है ।

७. उद्देश्य – महाकाव्य का उद्देश्य आनंद की प्राप्ति, चतुर्वर्ग फल प्राप्ति एवं आदर्शों और मूल्यों की स्थापना होना चाहिए ।

८. **छन्द** - प्रत्येक सर्ग में एक ही छन्द का विधान रहता है । सर्ग के अन्त में छंद परिवर्तन हो सकता है ।

९ नामकरण – महाकाव्य का नामकरण कवि, नायक, नायिक, स्थान या उद्देश्य आदि के आधार पर होना चाहिए ।

१०. भाषा-शैली – महाकाव्य की भाषा-शैली गरिमामयी और उदात्त होती है । इसकी भाषा सहज, सरल और भावानुकूल होती है । इसकी शैली अलंकृत होते हुए भी सहज होनी चाहिए।

महाकाव्य की उदाहरणें –

१. जायसी का ‘पद्मावत’ ।
२. तुलसीदास का ‘रामचरितमानस’ ।

२. खण्डकाव्य – खण्डकाव्य प्रबन्ध काव्य का लघु रूप है । इसमें जीवन के किसी एक अंग का वर्णन होता है ।

खण्डकाव्य के लक्षण :- महाकाव्य की तरह खण्डकाव्य भी प्रबंधकाव्य के अंतर्गत आता है । आचार्यों ने महाकाव्य के समान ही खण्डकाव्य के कई लक्षण निर्धारित किए हैं, जो इस प्रकार है -

१. **जीवन के एक पक्ष का चित्रण –** खण्डकाव्य में जीवन के किसी एक मार्मिक पक्ष का चित्रण सीमित रूप में होता है । यह वर्णन अपने आप में पूर्ण होता है ।

२. सीमित आकार – खण्डकाव्य महाकाव्य की अपेक्षा आकार में सीमित होता है । इसका कथानक अधिक विस्तृत ना होकर संक्षिप्त होता है ।

३. कथा की एकात्मकता – खण्डकाव्य की कथावस्तु व्यवस्थित होती है । इसमें कथा संगठन आवश्यक होता है । इसकी कथा ऐतिहासिक और काल्पनिक भी हो सकती है ।

४. **प्रासंगिक कथाओं का अभाव –** खण्डकाव्य में एक ही मुख्य कथा होती है । प्रासंगिक कथाओं का प्रायः अभाव रहता है । इसमें अगर प्रासंगिक कथाएं होती भी हैं तो मुख्य कथा को स्पष्ट करने के लिए होती हैं।

५. **उद्देश्य** – खण्डकाव्य का उद्देश्य महाकाव्य के समान चतुर्वर्ग फल प्राप्ति एवं आनन्द की प्राप्ति होता है ।

६. **रस** – खण्डकाव्य में अनेक रसों का वर्णन नहीं हो पाता है । इसमें एक ही रस प्रमुख होता है तथा अन्य रस सहायक रूप में आते हैं।

७. छन्द – खण्डकाव्य में एक ही छन्द का प्रयोग होता है । इसमें सर्ग और प्रसंग के अनुसार छन्द में परिवर्तन किया जा सकता है ।

खण्डकाव्य की उदाहरणें –

१. रामधारी सिंह दिनकर की ‘रश्मिरथी’ ।

२. तुलसीदास की ‘पार्वती मंगल’ ।

(ख) मुक्तक काव्य – मुक्तक काव्य बंधन से मुक्त होता है । इसमें पूर्वापर- संबंध नहीं होता । इसमें प्रत्येक छंद स्वतंत्र तथा अपने आप में पूर्ण होता है । कुछ मुक्तक ऐसे होते है जिनमें एक कथा सूत्र भी अनुस्यूत होता है।

जैसे – सूरदास का 'भ्रमर-गीत'।

मुक्तक काव्य की उदाहरणें –

1. कबीर के दोहे
2. बिहारी के दोहे
3. रहीम के दोहे

मुक्तक काव्य के दो भेद है –

१. पाठ्य मुक्तक – इस काव्य की रचना ऐसे छंदों में की जाती है , जिसे गया ना जा सके , केवल पठन किया जा सके । इसकी रचना दोहे , चौपाई आदि लघु छंदों में की जाती है ।

२. गेय मुक्तक – इसे गीतिकाव्य और प्रगीतकाव्य भी कहा जाता है । इसका मूल आधार भाव है । इसमें संगीतात्मकता होती है और इसका सम्बन्ध बुद्धि से ना होकर हृदय से होता है ।

गीतिकाव्य के तत्त्व –

1. व्यक्तिगत अनुभूति की प्रमुखता

2. भावात्मकता

3. संगीतात्मकता

4. रागात्मकता

5. संक्षिप्तता

6. कोमलकांत पदावली

(ग) चम्पू काव्य – गद्य और पद्य के मिले-जुले रूप को चम्पू काव्य कहा जाता है ।

चम्पू काव्य की उदाहरणें –

१. मैथिलीशरण गुप्त की ‘यशोधरा’ ।

२. भोजराज की ‘चम्पू रामायण’ ।

३. त्रिविक्रम भट्ट की ‘नलचम्पू’ ।

निष्कर्ष – काव्य के प्रकारों एवं तत्त्वों के आधार पर कहा जा सकता है कि काव्य के कई भेद-उपभेद हैं । काव्य का निर्माण चार तत्त्वों यथा – भाव, बुद्धि, कल्पना और शैली तत्त्व के आधार पर हुआ है । काव्य निर्माण में इन तत्त्वों का उचित समन्वय आवश्यक है ।